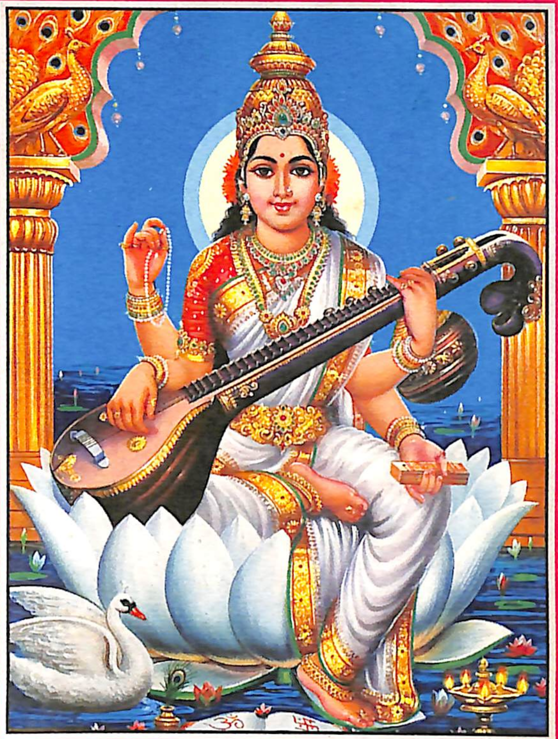


श्री

सरस्वती चालीसा

अर्थात्

शारदा चालीसा

स्तुति एवं आरती सहित

श्री सरस्वती चालीसा

अर्थात् शारदा चालीसा

श्री सरस्वती देवी स्तुति,
श्री सरस्वती अष्टक स्तोत्र एवं आरती

मूल्य : ६.००

रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार

प्रकाशक : **रणधीर प्रकाशन**
रेलवे रोड (आरती होटल के पीछे) हरिद्वार
फोन : (01334) 226297

वितरक : **रणधीर बुक सेल्स**
रेलवे रोड, हरिद्वार
फोन : (01334) 228510

दिल्ली विक्रेता : **गगन बुक डिपो**
4694, बल्लीमारान, दिल्ली-110006
फोन : (011) 23950635

SHREE SARASWATI CHALISA
SHARDA CHALISA
Published By : Randhir Prakashan, Hardwar (INDIA)

श्री सरस्वती चालीसा

जनक जननि पदम दुरज, निज मस्तक पर धारि।
बन्दौं मातु सरस्वती, बुद्धि बल दे दातारि॥
पूर्ण जगत में व्याप्त तव, महिमा अमित अनंतु।
रामसागर के पाप को, मातु तुही अब हन्तु॥

जय श्रीसकल बुद्धि बलरासी।
जय सर्वज्ञ अमर अविनाशी॥
जय जय जय वीणाकर धारी।
करती सदा सुहंस सवारी॥

रूप चतुर्भुज धारी माता।
सकल विश्व अन्दर विख्याता॥
जग में पाप बुद्धि जब होती।
तबही धर्म की फीकी ज्योति॥
तबहि मातु का निज अवतारा।
पाप हीन करती महि तारा॥
बाल्मीकिजी जो थे ज्ञानी।

तव प्रसाद महिमा जन जानी॥
रामायण जो रचे बनाई।
आदि कवि पदवी को पाई॥
कालिदास जो भये विख्याता।
तेरी कृपा दृष्टि से माता॥
तुलसी सूर आदि विद्वाना।
भये और जो ज्ञानी नाना॥

तिन्ह न और रहेउ अवलम्बा।
केवल कृपा आपकी अम्बा॥
करहु कृपा सोई मातु भवानी।
दुखित दीन निज दासहि जानी॥
पुत्र करई अपराध बहूता।
तेहि न धरइ चित सुन्दर माता॥
राखु लाज जननि अब मेरी।

विनय करुँ भाँति बहुतेरी ॥
मैं अनाथ तेरी अवलंबा ।
कृपा करऊ जय जय जगदंबा ॥
मधु कैटभ जो अति बलवाना ।
बाहुयुद्ध विष्णु से ठाना ॥
समर हजार पांच में घोरा ।
फिर भी मुख उनसे नहीं मोरा ॥

मातु सहाय कीन्ह तेहि काला।
बुद्धि विपरीत भई खलहाला॥
तेहि ते मृत्यु भई खल केरी।
पुरवहु मातु मनोरथ मेरी॥
चण्ड मुण्ड जो थे विख्याता।
छण महु संहारेउ तेहि माता॥
रक्तबीज से समरथ पापी।

सुरमुनि हृदय धरा सब काँपी॥
काटेउ सिर जिम कदली खम्बा।
बार बार बिनऊँ जगदंबा॥
जगप्रसिद्ध जो शुंभ निशुंभा।
छण में वधे ताहि तू अम्बा॥
भरत-मातु बुद्धि फेरेऊ जाई।
रामचन्द्र बनवास कराई॥

एहिविधि रावन वध तू कीन्हा।
सुर नर मुनि सबको सुख दीन्हा॥
को समरथ तव यश गुन गाना।
निगम अनादि अनंत बखाना॥
विष्णु रुद्र अज सकहिं न मारी।
जिनकी हो तुम रक्षाकारी॥
रक्त दन्तिका और शताक्षी।

नाम अपार है दानव भक्षी ॥
दुर्गम काज धरा पर कीन्हा।
दुर्गा नाम सकल जग लीन्हा ॥
दुर्ग आदि हरनी तू माता।
कृपा करहु जब जब सुखदाता ॥
नृप कोपित को मारन चाहै।
कानन में घेरे मृग नाहै ॥

सागर मध्य पोत के भंजे।
अति तूफान नहिं कोऊ संगे॥
भूत प्रेत बाधा या दुःख में।
हो दरिद्र अथवा संकट में॥
नाम जपे मंगल सब होई।
संशय इसमें करइ न कोई॥
पुत्रहीन जो आतुर भाई।

सबै छाँडि पूजें एहि माई॥
करै पाठ नित यह चालीसा।
होय पुत्र सुन्दर गुण ईशा॥
धूपादिक नैवेद्य चढ़ावै।
संकट रहित अवश्य हो जावै॥
भक्ति मातु की करैं हमेशा।
निकट न आवै ताहि कलेशा॥

बंदी पाठ करे सत बारा।
बंदी पाश दूर हो सारा॥
रामसागर बाधि हेतु भवानी।
कीजै कृपा दास निज जानी॥

मातु सूर्य कान्ति तव, अन्धकार मम रूप।
डूबन से रक्षा करहु, परूँ न मैं भव कूप॥
बल बुद्धि विद्या देहु मोहि, सुनहु सरस्वती मातु।
राम सागर अधम को आश्रय तू ही ददातु॥

सरस्वती देवी स्तुति

पद्मपत्र विशालाक्षी पद्मकेशर गन्धिनी
नित्यं पद्मालये देवी सा मां पातु सरस्वती॥ १॥
विशाल अक्ष है पद्म पत्र से, पद्म केशर की गंध सुशोभित।
वह सरस्वती देवी रक्षा करती हैं, जो पद्मालय में रहती हैं नित॥
यद्वागिति च मंत्रेण देवीमर्चतिसुब्रतः।
तस्यनासंस्कृता वाणी मुखाग्निः सरतो क्वचित्॥ २॥
यद्वागिति मंत्रों से अर्चन करता है जो जन।
वाणी शोभित होती मुख से वाग्देवी रहती प्रसन्न॥
या कुन्देन्दु तुषारहार धवला या श्वेत पद्मासना,
या वीणा वर दण्ड मण्डितकरा या शुभ्रवस्त्रावृता

या ब्रह्माच्युत शंकर प्रभृतिर्भिर्देवैः सदा वन्दिता।
सा मां पातु सरस्वती भगवति विशेष जाड्यापहा॥ ३॥

कुन्द इन्दु सम हार धवल है, श्वेत पद्म भी रखती है।
परिधान श्वेत हैं, कर में वीणा, वरदान अभय का देती है॥
ब्रह्मा विष्णु शंकर से पूजित, ज्ञान वेद का देती है।
जड़ता हरती है बुद्धि की, जग भव से रक्षा करती है॥

दोर्भिर्युक्ता चतुर्भिः स्फटिक मणिमयी मक्षमालां
दधानाहस्तेनैकेन पद्मं सितममलं शुकं पुस्तकं चापरेण।
या साकुन्देन्दुशंखस्फटिक मणिनिभा भासमानासमाना-
सामेवाग्देवतेयं निवसतुवदने शारदा सुप्रसन्ना॥ ४॥

द्विगुण चतुर्गुण मुक्ता माला, स्फटिक मणि सी आभा है।
अमल कमल शोभित हैं, कंठ शंख सम, रूप अनूप, मन आलोकित है॥
वीणा वादिनी पुस्तक धारिणी, आरोपित हों मम देह गेह में।
तन हुलसे, मन लेय हिलोरें, मन यश विलसै, ज्यूँ चंद्र सीप में॥

ॐ श्रीमच्चन्दन चर्चितोज्ज्वलवपुः शुक्लाम्बरमल्लिका-
मालालासित कुन्तलाप्रविलसन्मुक्तावली शोभिता॥५॥

मुक्तावली है शोभित उर पर, मस्तक पर मुकुट किरण चन्द्र है।
माला लसित चन्द्र किरण सम, ज्यूँ किरण परी नभ से उतरी है॥

सर्व ज्ञाननिधान पुस्तकधरा रुद्राक्षमालाधरा।
वाग्देवी वदनाम्बुजे वसतुमे त्रैलोक्य माताचिरम्॥६॥

विज्ञान ज्ञान की ईश्वरी, रखती हैं माला, पुस्तक कर में।
अंबुज वदन गंधमयी देवी, चिरकाल रहे मम देह गेह में॥

**अमल कमल संस्था लेखनी पुस्तकोद्यत करयुगलसरोजा कुन्दमन्दार गौरी।
धृत शशिधर खण्डोल्लास कोटीर जूड़ा भवतु भव भयानां भङ्गिनी भारती नः॥७॥**

हृदय कमल अमल वन में है शोभित।
लेखनी व पुस्तक कर युगल सरोज में है विलसित॥
पूर्ण इंदु सम आभा प्यारी खंड इंदु है केश में उलझित।
जग त्रय ताप नसावन को स्तन द्वय, चंद्र सूर्य सम विकसितो;
भक्त से ताप हरण हेतु अमृतमय दुग्ध पिलावे नित॥

विन्यस्य पुस्तकंवामे वीणामंगुलिपल्लवे।
भजामि भारतीमाद्यां गीतविद्या वितन्वतीम्॥८॥
मूढ़ पति को कामिनी करती है आकर्षित,
वाम हस्त में शोभित पुस्तक वाणी पर उंगली थिरकत।
शंकराचार्य का ज्ञान बढ़ावन को,राज महल के नूपुर झंकृत॥
परकाया प्रवेश की दीन्ही आज्ञा, प्रजा रही चमत्कृत।
ऐसी वीणा वादिनी को, नमन कर शतबार, रहूं निश्चिंत॥
शरदिन्दु विकाश मन्दहासां लसदिन्दीवर लोचनाभिरामाम्।
अरविन्द समानसुन्दरास्या मरविन्दासन सुन्दरी मुपास्ये॥९॥
हास है विकसित शरद इन्दु का, प्रकाश है विलास सा।
कुमोदिनी से लिखे हैं लोचन, मन तरंगित है समुद्र सा॥

पद्मासन से शोभित प्यारी, उज्जवल सरोज सी है आभा।
तन मन वार दिया उस पर, मन वाणी में तेज समाजा॥

ॐ नीहार हार घनसार सुधा कराभां
कल्याणदां कनक चम्पक दामगौरीम्।
उतङ्ग पीन कुचकुम्भ मनोहराङ्गी वाणीं
नमामि शिरसा वचसा विभूत्यै॥ १०॥

हार सुशोभित है गल में, ज्यों घन बीच दमकती है बिजुरी।
कुच कुंभ उठे चंद्र सूर्य से बिम्ब, लगे कंचन हारी कमर है प्यारी।
शीर्ष कमल सम, पीठ जलन्धर, आओ माँ! मैं शरण तिहारी।
भव पार करो माँ नैया मेरी, नमन तुम्हें शतबार कुमारी॥

ॐ यस्याः स्मरण मात्रेणवाग्वि भूतिर्विजृम्भते।
सा भारती चिरं नित्यं रमतान्मन्मुखाम्बुजे॥ ११॥

ब्रह्माजी के मुख कमलों में, विचरण करती राज हंसनी।
श्वेत कांति वाली देवी, मम जिह्वा पर नाचे नित॥

ॐ पाशांकुशधरा वाणी वीणा पुस्तक धारिणी।
मम वक्त्रे वसेन्नित्यं दुग्ध कुन्देन्दु निर्मला॥ १२॥

अंकुशपाश सूत्र अरु पुस्तक वीणा, धरती है जो कर में।
वाणी से वह सदा उच्चरें, हो धन भाग्य हमारे घर में॥

ॐ सरस्वति नमस्तुभ्यं वरदे कामरूपिणीं
विद्यारम्भं करिष्यामि सिद्धिर्भवतु मे सदा॥ १३॥

भव भय ताप नसावन को, नदी सुधा की धारा हैं।
नमन करूँ मैं जग की देवी, काम अनूप मन प्यारा है॥

एतत्स्तोत्रं सरस्वत्या मुहूर्तेब्राह्मणः पठेत्।
अचिरात् भारती तस्य तोषमायान्न संशयः॥ १४॥
यह स्तोत्र श्री सरस्वती देवी का, मुहूर्त एक ब्राह्मण जो पढ़ता।
दूर न हो उससे यह देवी, जो निशदिन अर्चन करता॥

ॐ चतुर्मुख मुखाम्भोज वनहंस वधूर्मम-
मानसेरमताम् नित्यं सर्व शुक्ला सरस्वती॥ १५॥
ब्रह्माजी की अतिशय प्यारी, मेधा धारण औ, श्रद्धा है।
मेरे मन मानसरोवर में, रमण करें सरस्वती सर्वशुक्ला हैं॥

ॐ नमस्ते शारदे देवि काश्मीरपुर वासिनी।
त्वांऽहं प्रार्थये नित्यं विद्यादानं च देहिमे॥ १६॥
वैष्णवी मात को नमन करूँ, शारदा जग विख्यात है।
प्रार्थना करूँ मैं नित उठ उनको, विद्या दान विचित्र है॥

अक्ष सूत्रांकुश धरा पाशपुस्तक धारणी।
मुक्ताहार समायुक्ता वाचि तिष्ठतु मे सदा॥ १७॥
अक्षसूत्र अंकुश अरु पुस्तक, पाश सुशोभित है कर में।
ममवाणी में तेज अधिक हो, मुक्तामय हार लसै उर में॥

कम्बुकण्ठी सुताम्रोष्ठी सर्वाभरण भूषिता।
महा सरस्वति देवी जिह्वाग्रेसन्निविश्यताम्॥ १८॥

शंख समान कंठ अतिसुन्दर, ओष्ठ पद्म की है आभा।
जिह्वा के अग्रभाग में, रहें स्थिर जो हैं विद्या दाता॥

या श्रद्धा धारणामेधावाग्देवी विधि वल्लभा।
भक्त जिह्वाऽग्र सदना समादि गुणदायिनी॥ १९॥

विधि की प्रियतम श्रद्धा प्यारी, मेधा धारणा वाग्देवी हैं।
ये भक्तों के मानस मन में, समादि गुणों की दाता हैं॥

ॐ नमामि यामिनी नाथलेखालंकृत कुन्तलाम्।
भवानी भव सन्ताप निर्वापणसुधानदीम्॥ २०॥

देश बंधे हैं चंद्रकला से, वे अमृत की स्वामिनी हैं।
भवानी हैं वे भव ताप नसावन, नदी सुधा की धारा हैं॥

या कवित्वं निरातंकं भुक्तिमुक्तिं चवाञ्छति।
सोऽभ्यर्च्यै नांदशश्लोक्या भक्त्यास्तोति सरस्त्वतिम्॥ २१ ॥
कवित्व भोग मोक्ष की दाता, निर्भय हो वह रहता जग में।
दस सूक्त प्रसून वाणी से बोले, भाव भक्ति का धर के उर में॥

तस्येवं स्तुवतो नित्यं समऽभ्यर्च्यसरस्वतीम्।
भक्ति श्रद्धाऽभियुक्तस्य षणमासात्प्रत्ययो भवेत्॥ २२ ॥
अर्चन करो विधिवत उसका, अमृत की वर्षा करती है।
श्रद्धा सहित यह स्तुति सुनकर, छः मास में आ जाती है॥

ततः प्रवर्ततेवाणी स्वेच्छया ललितऽक्षरा।
गद्य पद्यात्मकैर्शव्दैरप्रमेयैर्विवक्षितै॥ २३ ॥

भाववेद का प्रकट वो कर दें, जग में होवे उजियारा।
वाणी गद्य पद्यमयी निकसे, भव में होवे अतिशय प्यारा॥

अश्रुतो बुध्यते ग्रन्थाः प्राया सारस्वतः कविः।
इत्येवं निश्चयं विप्रः साहो वाच सरस्वती॥ २४॥

वाग्भारती ने निश्चय कर, प्रकट किया ये भाव।
लेकर दस ऋचाओं का सार, मुदित मन लावै मन में चाव।
करूँगी मैं उस पर कृपा, भाव जो मन में रखेगा।
कभी ना जग में भय खायेगा, चाव जो मन में रखेगा॥

卐 卐

सरस्वती अष्टक स्तोत्र

विनियोग

ॐ अस्य श्री वागवादिनी शारदा अष्टक मंत्रस्य श्री मार्कण्डेयाश्वलायन ऋषिः। श्रगधराऽनुष्टुप्छन्दः श्री सरस्वती देवता ऐं बीजं सौं शक्तिः श्री सरस्वती प्रसाद सिध्यर्थे जपे विनियोगः।

अथ ध्यानम्

ॐ शुक्लां ब्रह्म विचार सार परमामाद्यां जगद्वयापिनीं, वीणापुस्तक धारिणीम्भयदां जाड्यांधकारा पहाम्। हस्ते स्फटिक मालिका विदधतीं पद्मासने संस्थितां, वन्देताम् परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धि प्रदां शारदाम्। इति ध्यानम्।

स्तोत्र प्रारम्भ

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं हृद्यैक बीजौ शशिरुचि कमला कल्प वृक्षस्य शोभे भव्ये भव्यानुकूले कुमति वन दहे विश्व वन्द्याघ्रि पद्मे। पद्मे पद्मोपविष्टे प्रणतजनमना मोद सम्पादयित्री प्रीत्प्लुष्टाज्ञान कूटे हरिनिज दयिते देवि संसार सारे॥ १॥

ॐ ऐं ऐं ऐं इष्ट मन्त्रे कमलभवमुखांभोजभूति स्वरूपे रूपारूप प्रकाशे सकल गुणमये निर्गुणे निर्विकारे। न स्थूले नैव सूक्ष्मेप्यविदित विषये नापि विज्ञात तत्वे विश्वे विश्वान्तराले सुरवरनमिते निष्कले नित्य शुद्धे॥ २॥

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं जयतुष्टे हिमरुचिमुकटे बल्लकी व्यग्रहस्ते मातर्मातुनमस्ते दह दह जड़तां, देहि बुद्धिं प्रशस्ताम्। विद्ये वेदान्तगीते श्रुति परि पठिते मोक्षदे मुक्ति मार्गे, मार्गातीत स्वभावे

भव मम वरदा शारदे शुभ्रहारे ॥ ३ ॥

ॐ ध्रीं ध्रीं ध्रीं धारणाख्ये धृति मति नुतिभिर्नामभिः कीर्तनीये, नित्ये नित्ये निमित्ये मुनिगण नमिते नूतनेवैः पुराणे। पुण्ये पुण्ये प्रभावे हरिहर नमिते वर्ण शुद्धे, सुवर्णे मन्त्रे मन्त्रार्थ तत्त्वे मतिमति मतिदे माधव प्रीति नः दै ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं ध्रीं ह्रीं स्वरूपे दह दह दुरितं पुस्तक व्यग्रहस्ते, सन्तुष्टकार चित्तेस्मित मुखि सुभगे जृम्भि निस्तंभविद्ये। मोहे मुग्धे प्रबोधे ममकुरु सुमति ध्वांत विध्वंस कीये, गीर्वाग्गौर्भारती त्वं कवि वृष रसना सिद्धिदा सिद्ध विद्या ॥ ५ ॥

ॐ सौं सौं सौं शक्ति बीजे कमल भवमुखां भोज भूत स्वरूपे, रूपारूप प्रकाशे सकल गुणमये निर्गुणे निर्विकारे, नस्थूले नैव सूक्ष्मेप्यविदित विभवे जाप्य विज्ञान तत्वे, विश्वे

विश्वान्तराले सुरगण नमिते निष्कले नित्यशुद्धे ॥ ६ ॥

ॐ स्तौमि त्वां त्वाञ्चवन्दे भजमम रसनां माकदाचित्यजेथाः मामे बुद्धिर्विरुद्धा भवतु न च मनोदेविमे जातु पापम्। मामेदुःखं कदाचिद्धिपदं च समयेप्यस्तु मे नाकुलत्त्वं शास्त्रे वादे कवित्वे प्रसरतु मम धीर्नास्तु कुण्ठा कदाचित् सौभाग्यां बुद्धि देहि भवमन वरदा शारदे वीणापाणिः ॥ ७ ॥

ब्रह्मचारी व्रतीमौनी त्रयोदश्यां निरामिषः। सारस्वती नरः पाठात्सस्यादिष्ठार्थ लाभवान् ॥ ८ ॥

पक्ष्यद्वयेपि यो भक्त्या त्रयोदशयेक विंशतिमविच्छेद पठेद्धीमान् ध्यात्वा देवीं सरस्वतीम् वाँछितं फलमाप्नोति स लोकेनाऽत्र संशयः ॥ ९ ॥

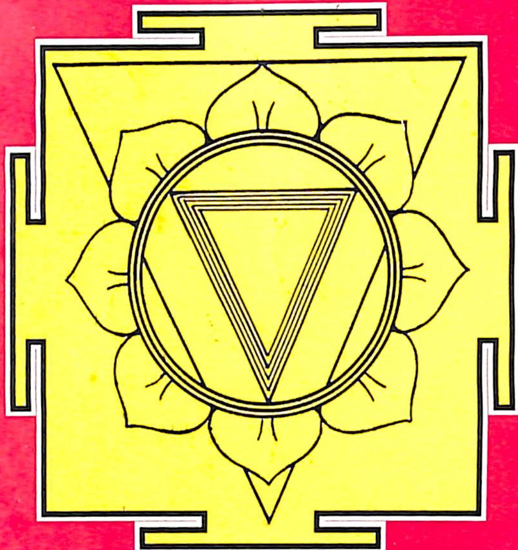
आरती श्री सरस्वती जी की

आरती करूं सरस्वती मातु, हमारी हो भव भय हारी हो।
हंस वाहन पद्मासन तेरा, शुभ्र वस्त्र अनुपम है तेरा।
रावण का मन कैसे फेरा, वर मांगत बन गया सबेरा।
यह सब कृपा तिहारी, उपकारी हो मातु हमारी हो।
तमोज्ञान नाशक तुम रवि हो, हम अम्बुजन विकास करती हो।
मंगल भवन मातु सरस्वती हो, बहुमूकन वाचाल करती हो।
विद्या देने वाली वीणा, धारी हो मातु हमारी।
तुम्हारी कृपा गणनायक, लायक विष्णु भये जग के पालक।
अम्बा कहायी सृष्टि ही कारण, भये शम्भु संसार ही घालक।
बन्दों आदि भवानी जग, सुखकारी हो मातु हमारी।
सदबुद्धि विद्याबल मोही दीजै, तुम अज्ञान हटा रख लीजै।
जन्मभूमि हित अर्पण कीजै, कर्मवीर भस्महिं कर दीजे।
ऐसी विनय हमारी भवभय, हरी, मातु हमारी हो।

आरती श्री सरस्वती जी की

ॐ जय वीणेवाली, मैया जय वीणे वाली।
ऋद्धि सिद्धि की रहती, हाथ तेरे ताली।
ऋषि मुनियों की बुद्धि को शुद्ध तू ही करती॥
स्वर्ण की भांति शुद्ध तू ही करती।
ज्ञान पिता को देती, गगन शब्द से तू।
विश्व को उत्पन्न करती, आदि शक्ति से तू॥
हंस वाहिनी दीजै, भिक्षा दर्शन की।
मेरे मन में केवल, इच्छा दर्शन की॥
ज्योति जगाकर नित्य, यह आरती जो गावे।
भव सागर के दुःख में, गोता न कभी खावे॥

श्री सरस्वती पूजा यन्त्र



रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार